शास्त्री प्रथमखण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र

'निर्मला' उपन्यास

लेखक – मुंशी प्रेमचन्द

व्याख्या -

" वह अपना रूप और यौवन उन्हें न दिखाना चाहती थी; क्योंकि वह देखने वाली आँखें न थी। वह उन्हें इन रत्नों का आस्वादन करने के योग्य ही नहीं समझती थी। कली प्रभात-समीर ही के स्पर्श से खिलती है। दोनों में समान सारल्य है। निर्मला के लिए वह प्रभात समीर कहाँ था"

प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'निर्मला' उपन्यास से ली गई हैं। इसके लेखक उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द हैं। प्रस्तुत गद्यांश में प्रेमचन्द वृद्ध मुंशी तोताराम से विवाह हो जाने के पश्चात निर्मला की मनःस्थिति का वर्णन कर रहे हैं। मुंशी तोताराम निर्मला के साथ मधुर व्यवहार करते थे। वह भी उनसे मधुर व्यवहार करने लगी थी। वह उनसे शारीरिक सम्बन्ध की इच्छा न रखकर उनके प्रति पिता की श्रद्धा रखती थी क्योंकि वे उसके पिता के उम्र के थे। मुंशी तोताराम की सज-धज का नाटक उसे असहनीय लगता था।

निर्मला में युवतियों की उमंग थी। वह भी साज-श्रृंगार करती और चाहती थी कि उनके यौवन की प्रशंसा हो। परन्तु उसके समक्ष पति रूप में वृद्ध तोताराम थे। आयु का यह अन्तर उसे यौवन का प्रदर्शन करने से रोक देता था। वह चाहती थी कि कोई समवय का युवक उसके सामने हो। जिस प्रकार कली प्रभात के प्रातः समीर के स्पर्श से ही खिलती है, उसी प्रकार निर्मला भी किसी समवय युवक के सामने खिल सकती थी परन्तु वृद्ध तोताराम की पत्नी के रूप में उसकी सारी उमंगे दब जाती थी।

प्रस्तुत गद्यांश में एक युवती के हृदय की अभिलाषाओं का मनोवैज्ञानिक निरूपण हुआ है।

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महावि० सुरवरेला, प्रतिष्ठान
11/10/20

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० – पत्र

दिगंत – भाग – २ बाध्य भाग

लेखक – गजानन माधव मुक्तिबोध

प्रश्न: – "जन-जन का चेहरा एक" शीर्षक कविता के सारांश का शेष भाग –

उत्तर: – जनता अनेक प्रकार के अत्याचार, अन्याय तथा अनाचार से प्रताड़ित हो रही है। मानवता के शत्रु जनशोषक दुर्जन लोग काली-काली छाया के समान, अपना प्रसार कर रहे हैं, अपने अत्याचारों का किला (दुर्ग) खड़ा कर रहे हैं।

गहरी काली छाया के समान दुर्जन लोग अनेक प्रकार के अनाचार तथा अत्याचार कर रहे हैं, उनके कुकृत्यों की काली छाया फैल रही है, ऐसा प्रतीत होता है कि मानवता के शत्रु इन दानवों द्वारा अनैतिक एवं अमानवीय कारनामों का काला दुर्ग काले पहाड़ पर अपनी काली छाया के रूप में प्रसार पा रहा है। एक ओर जनशोषक शत्रु खड़ा है, दूसरी ओर आशा की उल्लासमयी लाल ज्योति से अंधकार का विनाश करते हुए स्वर्ग के समान मित्र का घर है।

सम्पूर्ण विश्व में ज्ञान एवं चेतना की ज्योति में एक रूपता है। संसार का कण-कण उसके तीव्र प्रकाश से प्रकाशित है। उसके अन्तर से प्रस्फुटित क्रान्ति की ज्वाला अर्थात प्रेरणा सर्वव्यापी तथा उसका रूप भी एक जैसा है। सत्य का उज्ज्वल प्रकाश जन-जन के हृदय में व्याप्त है तथा अभिनव साहस का संचार एक समान हो रहा है क्योंकि अंधकार को चीरता हुआ मित्र का स्वर्ग है।

प्रकाश की शुभ्र ज्योति का रूप एक है। वह सभी स्थान पर एक समान अपनी रोशनी बिखेरता है। क्रान्ति से उत्पन्न ऊर्जा एवं शक्ति भी सर्वत्र एक समान परिलक्षित होती है। सत्य का दिव्य प्रकाश भी समान रूप से सबको आमन्त्रित करता है। शेष आगे की कक्षा में –

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० कृ० सं० महावि० सुलक्षणा शोभियाँ
11/10/20

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र

निबंधमाला — गद्य भाग

शीर्षक - "निर्बल के बल राम"

लेखक — महात्मा गाँधी जी

प्रश्न: 'निर्बल के बल राम हैं' गाँधी जी की यह धारणा कहाँ तक तर्कसंगत है? इस पर प्रकाश डालें।

उत्तर:- 'निर्बल के बल राम हैं' शीर्षक आत्मकथात्मक निबंध गाँधी जी की प्रसिद्ध रचना है। इस निबंध में गाँधीजी ने अपने साथ घटित घटनाओं को बड़े साफगोई के साथ वर्णन किया है। इसमें इन्होंने विलायत में घटी एक घटना का उल्लेख करते हैं।

'गाँधी जी अपने विलायत वास के अंतिम साल सन् 1890 की एक घटना का उल्लेख करते हैं। पोर्टस्मथ में अन्नाहारियों का एक सम्मेलन हुआ था। उसमें अपने एक हिन्दुस्तानी मित्र के साथ गाँधी जी भी आमंत्रित थे। पोर्टस्मथ खलासियों का बन्दरगाह कहलाता था। वहाँ काफी दुराचारिणी स्त्रियाँ रहती थी। वहाँ शायद ही कोई ऐसा घर मिले जो इस तरह के दुराचार से बचा हो।

गाँधी जी अपने मित्र के साथ ऐसे ही घर में ठहराए गये थे। ऐसा जानबूझ कर नहीं किया गया था, बल्कि वहाँ की सामाजिक ताना-बाना ही ऐसा था।

रात्रि में खा-पीकर गाँधी जी ताश खेलने बैठे। इस खेल में एक दुराचारिणी औरत भी शामिल थी। हँसी मजाक शुरू हुआ पर हास-परिहास बढ़ते-बढ़ते उस स्थिति में पहुँचा कि वह केवल विनोद का विषय का विषय न रहा। अपितु शरीर के स्तर पर भी उतरने की स्थिति उत्पन्न हो गई। ताश अलग रखकर गाँधी जी डूबने की तैयारी कर ही रहे थे कि उनके हिन्दुस्तानी मित्र ने रोका- "अरे तुझमें यह कलयुग क्यों? तेरा यह काम नहीं है। भाग यहाँ से।"

गाँधी जी का अटल विश्वास है कि हृदय से की गई ईश्वर की प्रार्थना कभी व्यर्थ नहीं जाती है। ईश्वर उसे अवश्य सुनते हैं और समय पर आर्तव्यक्ति की सहायता भी करते हैं। शेष आगे —

P.T.O.

अतः हर आदमी को हृदय से भगवान का स्मरण करना चाहिए। ऐसे स्मरण करने वालों को अदृश्य रूप में उपस्थित होकर भगवान हर संकट की घड़ी में सहायता करते हैं, जिसका उसे कुछ पता नहीं चलता है।

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०कृ० सं०महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

11/10/20